एम.एच.डी.-15
हिन्दी उपन्यास-2
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी. - 15
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.-15/टीएमए/2022–2023
कुल अंक : 100

1. **निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :** $10 \times 4 = 40$

(क). आजकल के नौजवानों में टेलेंट की कमी ही नहीं, इट इज देयर लेकिन तपस्या नहीं है। वे सीखना नहीं चाहते। एकदम नाम, ओहदा और दौलत चाहते हैं। अगर आप ने कभी मोटर नहीं चलाई तो आप मोटर कैसे चला सकेंगे! जरूर एक्सीडेंट करेंगे, सर्टनली करेंगे! मोटर तो मामूली चीज़ है। जर्नलिज्म सियासत का जहाज है। जर्नलिस्ट चाहे तो स्टेट को बचा ले, चाहे तो डूबो दे। कितनी बड़ी जिम्मेदारी है।'' कशिश जी ने जिम्मेवारी के बोझ से दोनों बाहें फैला कर गहरी सांस ली।

(ख). कहा ''राबी से सावन सुन जाओ! गा री गा, वह दोहरा गा!
''सावन माह सुहावना जो धरती बूँद पई
अनहद बरसे मेघला जो मन की तृप्त गई
मल्हाराँ सोहन सारे सावन, दूती दूत लगे उठ जावन
नी घर खेलन कुड़ियाँगावन, मैं घर रंग–रँगीले आवन।
मेरीयाँ आसाँ रब्ब पुजाइयाँ,
ताँ मैं उन संग अँखीया लाइयाँ
सँइया देन मुबारिक आइयाँ
शाह इनायत अंग लगाइयाँ।
भादो भावे सखी, जो पल होए मिलाप
जो घट देखूँ खोल के, घटि–घटि के विच आप।''
गाते–गाते राबयाँ का स्वर थर्राने लगा। आँखें भर आईं।

ग). इस रूमानी प्रेम का महत्व है, पर मुसीबत यह है कि वह कच्चे मन का प्यार होता है, उसमें सपने, इन्द्रधनुष और फूल तो काफी मिक़दार में होते हैं पर वह साहस और परिपक्वता नहीं होती जो इन सपनों और फूलों को स्वस्थ सामाजिक संबंध में बदल सके। नतीजा यह होता है कि थोड़े दिन बाद यह सब मन से उसी तरह गायब हो जाता है जैसे बादल की छाँह। आखिर हम हवा में तो नहीं रहते हैं और जो भी भावना हमारे सामाजिक जीवन की खाद नहीं बन पाती, जिन्दगी उसे झाड़–झंखाड़ की तरह उखाड़ फेंकती है।

(घ) अब जरूरत पड़ने पर रातोंरात वे अपने राजनीतिक गुट में सैंकड़ों सदस्य भरती करा देते थे। पहले भी वे जनता की सेवा जज की इजलास में जूरी और असेसर बनकर, दीवानी के मुकदमों में जायदादों के सिपुर्ददार होकर और गाँव के जमींदारों में लम्बरदार के रूप में करते थे। अब वे कोऑपरेटिव यूनियन के मैनेजिंग डाइरेक्टर और कॉलेज के मैनेजर थे। वास्तव में वे इन पदों पर काम नहीं करना चाहते थे क्योंकि उन्हें पदों का लालच न था। पर उस क्षेत्र में ज़िम्मेदारी के इन कामों को निभानेवाला कोई आदमी ही न था और वहाँ जितने नवयुवक थे, वे पूरे देश के नवयुवकों की तरह निकम्मे थे, इसलिए उन्हें बुढ़ापे में इन पदों को सँभालना पड़ा था।

2. यशपाल के उपन्यास साहित्य का परिचय दीजिए। 10

3. कृष्णा सोबती के कथा साहित्य पर प्रकाश डालिए। 10

4. माणिक मुल्ला की चारित्रिक विशिष्टताओं पर विचार कीजिए। 10

5. 'राग दरबारी' की भाषागत विशेषताएँ बताइए। 10

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : $5 \times 4 = 20$

(क) 'झूठा सच' का महत्व
(ख) 'जिंदगीनामा' में परिवेश
(ग) 'सत्ती' का चरित्र
(घ) 'रंगनाथ' और 'रुप्पन'